



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

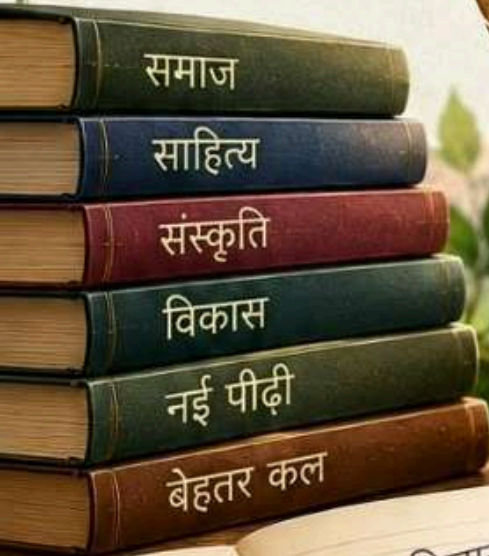
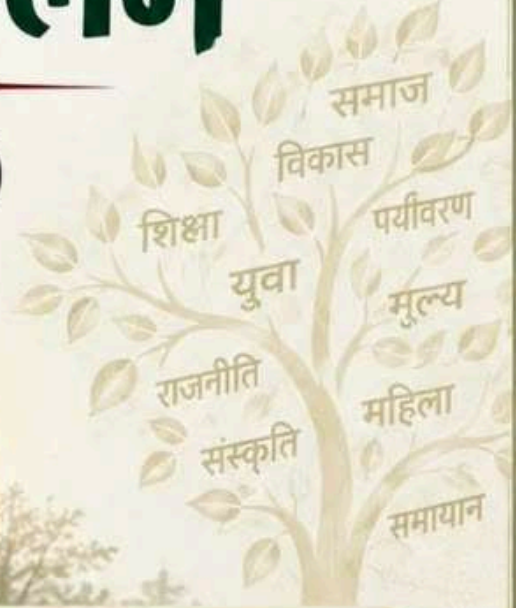
शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-

त्रिशिका धरा

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - त्रिशिका धरा

जीवन के बहाव में समर्पण



जीवन के बहाव में समर्पण

कभी-कभी जीवन हमें कोई नया सत्य नहीं सिखाता, वह केवल हमारी आँखों से वह पर्दा हटा देता है, जिसके पीछे सत्य पहले से मौजूद था।

शायद यही परिपक्व होने का एक अर्थ है।

बचपन में जब हम मंदिर जाते हैं, तो हमारे हाथ जुड़े होते हैं, लेकिन मन में इच्छाओं की एक लंबी सूची होती है। हमें कुछ चाहिए होता है। कभी सफलता, कभी सुख, कभी धन, कभी किसी व्यक्ति का साथ और कभी अपनी मनचाही दुनिया।

तब हमारी प्रार्थना में विश्वास होता है, लेकिन उस विश्वास के भीतर एक अपेक्षा भी छिपी रहती है। हम कहते हैं, ईश्वर, मेरी यह इच्छा पूरी कर दीजिए। फिर जीवन हमें धीरे-धीरे यह बताता है कि ईश्वर को मनाने और जीवन को अपनी इच्छा के अनुसार चलाने में बहुत अंतर है।

- कुछ चीजें हम पूरी शक्ति से चाहते हैं, फिर भी नहीं मिलतीं।
- कुछ लोग हमारे जीवन में पूरी आत्मीयता से आते हैं, फिर एक दिन बिना हमारी अनुमति के चले जाते हैं।
- कुछ दरवाजे हम बार-बार खटखटाते हैं, लेकिन वे हमारे लिए नहीं खुलते। और;
- कुछ रास्ते ऐसे होते हैं, जिन पर हम जाना ही नहीं चाहते, लेकिन परिस्थितियाँ हमें वहीं ले जाती हैं।

शुरू में यह सब अन्याय लगता है। फिर प्रश्न उठता है। इतना चाहने के बाद भी ऐसा क्यों हुआ? और शायद वर्षों बाद उसी प्रश्न का उत्तर भी भीतर से आता है। हर वह चीज, जिसे हम चाहते हैं, हमारे लिए आवश्यक नहीं होती। और हर वह चीज, जिसे हम खो देते हैं, हमारे विरुद्ध नहीं होती। यहीं से प्रार्थना बदलने लगती है। पहले हम कहते थे, मेरी इच्छा पूरी करो। अब मन कहता है, जो मेरे लिए उचित हो, उसे स्वीकार करने की शक्ति दो। यह परिवर्तन बहुत छोटा दिखाई देता है, लेकिन भीतर से मनुष्य को बदल देता है। क्योंकि माँगने वाला व्यक्ति परिणाम को पकड़कर बैठा रहता है, जबकि स्वीकार करने वाला व्यक्ति अपने कर्म पर लौट आता है।

वह जानता है कि प्रयास उसका अधिकार है, परिणाम नहीं। हम अपने जीवन में सबसे अधिक थकते शायद इसलिए नहीं हैं कि हमारे पास समस्याएँ बहुत हैं, बल्कि इसलिए कि हम हर समस्या का अंतिम उत्तर अपने हाथ में रखना चाहते हैं। हमें पता होना चाहिए कि कल क्या होगा।

कौन हमारे साथ रहेगा, कौन हमें समझेगा, किस प्रयास का क्या परिणाम मिलेगा, कौन-सा रिश्ता जीवन भर चलेगा।

लेकिन जीवन कोई ऐसा प्रश्नपत्र नहीं है, जिसकी उत्तर-पुस्तिका हमें पहले से दे दी गई हो।

कुछ उत्तर चलते-चलते मिलते हैं।

कुछ प्रश्नों के उत्तर कभी नहीं मिलते।

और शायद हर उत्तर का मिल जाना भी आवश्यक नहीं है। क्योंकि कुछ प्रश्न हमें उत्तर देने के लिए नहीं, बदलने के लिए मिलते हैं। यहीं नियंत्रण धीरे-धीरे समर्पण में बदलता है।

समर्पण : कमजोरी नहीं, भीतर की स्वतंत्रता। समर्पण को अक्सर कमजोरी समझ लिया जाता है। लेकिन अपने भीतर से पूछिए। क्या हर चीज को नियंत्रित करते रहने वाला मन वास्तव में मजबूत होता है?

या वह केवल डरता है कि कहीं कुछ उसकी इच्छा के विरुद्ध न हो जाए?

समर्पण कहता है, मैं अपनी ओर से कोई कमी नहीं रखूँगा, लेकिन जीवन को अपने आदेश पर चलाने की जिद भी नहीं करूँगा। मैं अपना कर्म चुन सकता हूँ। दूसरों की प्रतिक्रिया नहीं। मैं अपना प्रेम दे सकता हूँ। दूसरे के मन में प्रेम उत्पन्न नहीं कर सकता। मैं किसी के साथ सच्चा रह सकता हूँ। लेकिन उसे हमेशा मेरे साथ रहने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। यही स्वतंत्रता है। दूसरों को भी स्वतंत्र छोड़ना और स्वयं को भी परिणामों की गुलामी से मुक्त करना।

शायद इसी कारण प्रेम का सबसे सुंदर रूप अधिकार नहीं, स्वीकार है। किसी को प्रेम करना यह नहीं कि वह हर परिस्थिति में हमारे पास रहे। कभी-कभी प्रेम का अर्थ यह भी होता है कि हम किसी व्यक्ति के चले जाने के बाद उसके प्रति अपने भीतर नफरत पैदा न होने दें।

वियोग को अपनी हार न मानें। क्योंकि हर मिलन स्थायी नहीं होता और हर वियोग व्यर्थ नहीं होता।

कुछ लोग हमारे जीवन में रहने के लिए आते हैं। कुछ हमें बदलने के लिए। और कुछ केवल इतना सिखाने के लिए कि स्वयं को किसी दूसरे व्यक्ति में खो देना प्रेम नहीं है। प्रेम कीजिए। पूरे मन से कीजिए। लेकिन प्रेम के लिए स्वयं का मूल्य कम मत कीजिए। किसी को पाने की इच्छा रखिए, पर उसके सामने अपनी आत्मा की याचना मत रखिए।

जो आपका है, उसे पकड़कर रखने की आवश्यकता नहीं होगी। और जो आपका नहीं है, उसे दोनों हाथों से पकड़कर भी रखा नहीं जा सकेगा। विश्वास और जीवन का प्रवाह

फिर प्रश्न आता है कि आखिर विश्वास किस पर किया जाए?

शायद उस शक्ति पर, जिसके सामने हमारे सारे हिसाब अधूरे हैं। हम अपने शरीर को ही देख लें। हमने अपनी पहली साँस स्वयं तय नहीं की। हमने अपने हृदय को धड़कना नहीं सिखाया। हमने अपनी नींद में शरीर को काम करते रहने का आदेश नहीं दिया। हमारे भीतर जीवन का एक बड़ा हिस्सा हमारी इच्छा के बिना चल रहा है। तो फिर यह मान लेने में इतनी कठिनाई क्यों है कि जीवन का पूरा भार हमारे कंधों पर रखा हुआ नहीं है?

शायद हमें हर समय सब कुछ संभालने की आवश्यकता नहीं। शायद कुछ चीजें हमें केवल सौंप देनी चाहिए।

नदी को देखिए। वह अपने रास्ते में आने वाली हर चट्टान से लड़ती नहीं। जहाँ मार्ग बंद मिलता है, वहाँ दिशा बदल लेती है। वह रुकती नहीं। यही बात जीवन में भी लागू होती है। दिशा बदलना हमेशा हार नहीं होता। कभी-कभी वही जीवन की बुद्धिमत्ता होती है। हम जिस दरवाजे को बंद देखकर रो रहे होते हैं, संभव है जीवन हमें किसी दूसरे रास्ते पर बुला रहा हो। लेकिन हम पीछे मुड़कर उसी दरवाजे को खोलने में इतने व्यस्त होते हैं कि सामने खुला हुआ रास्ता देख ही नहीं पाते।

मेरी प्रार्थना का बदलता स्वरूप, इसलिए अब मेरी प्रार्थना में बहुत-सी इच्छाएँ नहीं हैं। मैं जीवन से यह नहीं कहती कि सब कुछ मेरी इच्छा के अनुसार हो। मैं केवल इतना चाहती हूँ कि जब परिस्थितियाँ मेरी इच्छा के अनुसार न हों, तब मेरा विवेक मेरा साथ न छोड़े। जब कोई अपना दूर जाए, तब मेरा मन कटु न हो। जब कोई सपना टूटे, तब मेरा आत्मविश्वास न टूटे। जब कोई रास्ता बंद हो, तब मैं चलना न छोड़ूँ।

और जब जीवन मुझे कुछ ऐसा दे, जिसे मैं समझ न सकूँ, तब भी इतना विश्वास बचा रहे कि हर बात का अर्थ उसी क्षण समझना ज़रूरी नहीं है। कुछ अर्थ समय के साथ खुलते हैं। कुछ घाव बाद में जाकर शिक्षक बनते हैं। और कुछ अधूरेपन के भीतर से मनुष्य का सबसे पूरा रूप निकलता है। यही शायद स्वीकार है। स्वीकार का अर्थ यह नहीं कि जो हुआ, वह अच्छा ही था।

स्वीकार का अर्थ है कि जो हो चुका है, उसके साथ अब मैं अपने वर्तमान को नष्ट नहीं करूँगी।

मैं अतीत को बदल नहीं सकती।

लेकिन अतीत मेरे आज को कितना नियंत्रित करेगा, इसका निर्णय मैं कर सकती हूँ। यहीं से भीतर शांति का जन्म होता है। जब हम हर घटना से लड़ना बंद करते हैं, तो जीवन अचानक आसान नहीं होता। बस हम उसके विरुद्ध खड़े रहना बंद कर देते हैं।

और यही अंतर बहुत बड़ा है। स्वीकार की ओर एक यात्रा, एक दिन शांत बैठकर अपने जीवन को देखिए। उन इच्छाओं को याद कीजिए, जो पूरी नहीं हुई। उन लोगों को याद कीजिए, जिन्हें आप रोक नहीं पाए। उन रास्तों को याद कीजिए, जिन पर आप जाना चाहते थे, लेकिन जा नहीं सके।

फिर अपने वर्तमान को देखिए। आप अभी भी यहाँ हैं। आपने बहुत कुछ खोया, फिर भी जीवन ने आपको पूरी तरह नहीं छोड़ा।

आप बदले हैं।

टूटे हैं।

संभले हैं।

और चलते रहे हैं।

शायद जीवन की सबसे बड़ी कृपा यही है कि वह हमें हर बार हमारी कल्पना के अनुसार नहीं बचाता। कभी-कभी वह हमें हमारी कल्पना से बाहर निकालकर हमारे वास्तविक स्वरूप तक पहुँचाता है। इसलिए अब मुझे लगता है कि परमात्मा से निकटता का अर्थ केवल प्रार्थना में सिर झुकाना नहीं है। कभी-कभी उसका अर्थ यह भी है कि जीवन के सामने अपना अहंकार थोड़ा झुका दिया जाए। आँखें बंद करके अपने भीतर देखिए।

जो हुआ, उसे आने दीजिए।

जो चला गया, उसे जाने दीजिए।

जिसका उत्तर नहीं मिला, उसे फिलहाल अनुत्तरित रहने दीजिए।

हर बात को समझ लेने की जल्दी मत कीजिए।

बस कुछ देर जीवन को वैसा ही रहने दीजिए, जैसा वह है।

शायद उसी शांति में पहली बार यह अनुभव होगा कि जिसे हम वर्षों से बाहर खोज रहे थे, वह हमारे भीतर पहले से मौजूद था। तब प्रार्थना माँग नहीं रहती। वह एक मौन विश्वास बन जाती है। तब समर्पण हार नहीं रहता। वह भीतर की स्वतंत्रता बन जाता है। और तब स्वीकार केवल किसी परिस्थिति को मान लेना नहीं रहता। वह जीवन के साथ हमारा संबंध बन जाता है। शायद परमात्मा को पाने की यात्रा कहीं जाने की यात्रा नहीं है। शायद यह धीरे-धीरे अपने विरोध को छोड़ने की यात्रा है। और जिस दिन मन कह देता है, अब जो है, उसे पूरी चेतना से जीऊँगी, उस दिन भीतर कोई दरवाजा खुलता है।

वहाँ कोई चमत्कार नहीं होता। बस मन थोड़ा शांत हो जाता है। और कभी-कभी यही शांति सबसे बड़ा चमत्कार होती है।

- त्रिशिका धरा



लेखक परिचय

नाम – त्रिशिका धरा

निवास – कानपुर, उत्तर प्रदेश





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ..... **त्रिशिका धरा**जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

